५—श्रीरामानन्दवेदान्तग्रन्थमालायाः पञ्चमं पुष्पम् ।

❀ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ❀

श्री १००८श्रीरामानन्दाचार्याय नमः । श्री१००८श्रीटीलाचार्याय नमः

श्री १००८ द्वाराचार्य श्रीटीलाचार्यविरचिता—

❀ शिक्षा-सुधा ❀

(स्वामिश्रीवैष्णवदासशास्त्रिनिर्मितश्रीटीलापञ्चस्तवीसहिता ।)

सा च श्रीनृसिंहमन्दिरस्य (भण्डारीपोल-अहमदाबाद)
महान्त पं० श्रीपुरुषोत्तमदासजी 'श्रीवैष्णव' वैष्णव-
भूषणसकाशात् प्रकाशनव्ययमासाद्य न्याय-
रत्नवेदान्ततीर्थतर्कवागीशन्यायवेदान्त-
केसरीत्यादिपदवीसमलङ्कृतेनो-
पनिषद्भाष्यकारस्वामिश्री-
वैष्णवदासशास्त्रिणा
श्रीवृन्दावनस्थाच्छ्री-
१०८ श्रीपहाड़ी-
बाबाश्रमात्-
(वंशीवट-खाकचौकतः)
प्रकाशिता ।

प्रथमावृतिः ५०० | श्रीरामानन्दाब्द ६४३ सं० १९९९ वि० | मूल्यम् ।)॥

शिक्षासुधायाः सर्वेऽप्यधिकाराः प्रकाशकेन स्वायत्तीकृताः ।

श्रीमद्रामानन्दाय नमः । श्रीमट्टीलाचार्याय नमः ।

भूमिका



सीतानाथसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥ १ ॥

मुझे यह प्रकट करते अतीव आनन्द हो रहा है कि मेरी बहुत काल से सेवित आशालता आज कुसुमित हुई ; जो यह शिक्षा-सुधा मुद्रित होकर प्रकाशित हुई । फलसम्पन्न तो तब होगी जब भाषाटीका के साथ विशाल प्रचारद्वारा इसकी रसधार भारत के प्रत्येक प्रान्त में व्याप्त होगी ।

लगभग २० वर्ष हुए जब मैं पूज्य श्रीगुरुदेव* के चरण-कमलों की शरण में आया था । करुणासिन्धु गुरुदेव ने जगज्जननी श्रीजानकीजी की शरणपूर्वक अनन्तकल्याणगुणसागर दोष-वर्जित उभयविभूतिनायक पूर्णब्रह्म भगवान् श्रीरामजी के चरण-कमलों की निखिलभीतिनिवारिणी शरणागति को प्राप्तकराकर निर्भय किया था । साथ ही साथ चार वस्तुयें और भी प्रदान कर कहा था कि—"यह हमारी परम्पराप्राप्त सम्पत्ति है । हमारे पूज्यगुरुदेव (श्री पहाड़ीबाबा जी) ने अपने श्रीगुरुमहाराज (श्री १००८ स्वामी श्रीसरयूदास जी महाराज—मूँजियाखाक चौक श्री डाकोर जी) से बहुत अनुनय विनय करके प्राप्त किया था ।" वे चारों वस्तु चार ग्रन्थरत्न थे । १-श्रीटीलाचार्यविरचित तत्त्व-

*श्री १०८ श्रीनरसिंहदास जी महाराज पहाड़ीबाबा के योग्य शिष्य योगिराज श्री १०८ श्रीगोपालदास जी महाराज मौनी जी (वंशीवट-खाकचौक, श्रीवृन्दावन) ।

सुधा २-श्रीटीलाचार्यविरचित श्रीशिक्षासुधा ३-श्री मङ्गलदासाचार्य-विरचित श्रीदिव्यरामस्तवराजभाष्यम् ४-श्रीमङ्गलदासाचार्यविर-चितश्रुतिगीताभाष्यम् ।

गुरुदेव की आज्ञानुसार मैंने उन ग्रन्थों की प्रतिकृतियाँ (नकलें) करलीं और चारों ग्रन्थ जैसे के तैसे लौटा दिये। थोड़े दिनों बाद मैं संस्कृत का अध्ययन करने चला गया। जब कुछ बोध हुआ तो प्रतिलिपियों को एकबार मूल से मिलान करने की इच्छा हुई। किन्तु गुरुदेव के पास आने पर विदित हुआ कि उक्त चारों ग्रन्थ श्रीरामचरणदास जी (मेरे बड़े गुरुभाई) ले गये हैं। जोकि यहाँ से जाने के कुछ ही दिन बाद सन्यासी हो गये हैं। मैं ने उनका बहुत पता लगाया पर कुछ भीपता न चला।

बहुत दिन से इस गुरुप्रदत्त सम्पत्ति को प्रकाशित करने की तीव्र इच्छा मेरे मन में थी। परन्तु समयाभाव और द्रव्याभाव के कारण शिक्षा-सुधा का प्रकाशन मेरे लिये अशक्य ही रहा। इस वर्ष प्रवचन करने के लिये मैं अहमदाबाद (सरयूतीर्थ-प्रेमदर-वाजा) गया तो भण्डारी पोल के विचारशील महान्त पं० श्रीपुरु-षोत्तमदासजी से इसके प्रकाशनार्थ प्रार्थना की। उन्होंने इसेदेखते ही महँगी की परवाह न कर प्रकाशन का पूर्ण द्रव्य मुझे तुरन्त देदिया। मैं ने सधन्यवाद रुपये लेलिये; और श्रीवृन्दावन आकर शिक्षासुधाका मुद्रापण प्रारम्भ किया। एक तो पासमें अबोधावस्था में की गई प्रतिलिपि मात्र का सहारा था दूसरे शरीर अत्यन्तरुग्ण था। ऐसी दशा में मुझ से जैसा बना वैसा शोधकर प्रकाशित किया। यदि कहीं पर त्रुटि हो तो पाठक सज्जन सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। अग्रिम आवृत्ति में सब ठीक कर दिया जायगा।

शिक्षा-सुधा वास्तव में शिक्षा की सुधा ही है। इसका पानकर

अर्थात् इसका पुनः पुनः अनुशीलन कर के मनुष्य अमर-पद (मोक्ष) को अवश्य प्राप्त कर सकता है। क्योंकि इसमें वेद वेदान्त पाञ्चरात्र इतिहास पुराण तथा धर्मशास्त्र के अनुकूल भक्ति-सिद्धान्त अच्छी प्रकार से भरा हुआ है। गागर में सागर की उक्ति यहीं पर चरितार्थ होती है। रस भाव शब्द तथा अर्थालङ्कारों से अलङ्कृत यह एक प्रौढ़ तथा सुन्दर धार्मिक काव्यहै ।

शिक्षासुधा में धार्मिक नीति, नवधा भक्ति तथा प्रपत्तिका का पूर्ण वर्णन करते हुए पञ्चसंस्कार वैष्णवधर्म एवं सत्सङ्गति की महिमा का विशद प्रतिपादन किया गया है। अन्त में विशिष्टाद्वैत-सिद्धान्तानुकूल अचित् चित् और ईश्वर इन तीन तत्त्वों का श्रुत्य-नुकूल सरल एवं युक्तिपूर्ण विवेचन किया गया है।

श्रीसम्प्रदायप्रधानाचार्य आचार्यचक्रवर्त्ती सर्वेश्वरश्रीरामावतार आनन्दभाष्यकार श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जी महा-राज यतिसार्वभौमकी परम्पराके कौस्तुभमणि श्रीटीलाद्वारपीठाचार्य श्री १००८ जगद्गुरु श्रीटीलाचार्य जी महाराज शिक्षा-सुधा के निर्माता हैं। यद्यपि शिक्षा-सुधा के प्रत्येक दोहे में 'टीला' ऐसा ही लिखा हुआ है, तथापि वृद्धमहात्माओं तथा तत्त्वसुधा और शिक्षा-सुधा के समाप्तिसूचक गद्यों द्वारा विदित होता है कि द्वाराचार्य श्री टीलाचार्य जी महाराज का मुख्यनाम 'श्रीसाकेतनिवासाचार्य जी' है। 'टीलाचार्य' यह तो उपनाम है जोकि सिद्धाई के कारण पड़ गया है। श्रीटीला जी महाराज आचार्य पाद श्री अनन्तानन्द जी महाराज के प्रधानशिष्य श्रीगालवपीठाचार्य (श्रीगलतापीठाचार्य) जगत्प्रसिद्ध आचार्यपाद श्रीकृष्णदास जी महाराज पयोहारी जी के शिष्य हैं। आपका जन्म गौडब्राह्मण वंश में खाटुखण्डुला ग्राम में अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतीया) को हुआ था। इस

लिये आचार्यपाद श्रीटीलाचार्य जी की जयन्ती अक्षयतृतीयाको ६ बजे मनाना चाहिये । आपके पिता का नाम पं० श्रीजानकी-निवास जी तथा माता का नाम श्रीइन्द्रिरादेवी था । सुना जाता है कि आप एक छोटे से टीले पर बैठ कर भगवान् श्रीसीताराम जी के आराधन और श्रीवाल्मीकीयरामायणादि ग्रन्थों के पाठद्वारा अपना कालक्षेप किया करते थे । बड़े-बड़े तत्त्वज्ञ सिद्ध योगी महात्मा-गण आकर आपको अपना शिष्य बनाना चाहते थे। परन्तु आप टीले के साथ ही साथ इतना बढ़ते थे कि कोई आपके कण्ठी ही न बाँध पाता था । मेघ की समान गम्भीर वाणी से आप टीले पर से ही शास्त्रार्थ में सब को परास्त करते थे । इसी-लिये आपका उपनाम 'श्रीटीलाजी' पड़गया । श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध श्रीटीलाद्वारपीठ की स्थापना आपने ही की है। आपके पूर्ण जीवनचरित्र लिखने की सामग्रियाँ मैं एकत्रित कर रहा हूँ । जिन महानुभावों को आपके बारे में कुछ विदित हो वे कृपया मुझे अवश्य सूचित करें । अभीतक श्रीटीलाचार्य जी के सुरद्रुम, तत्त्वसुधा और शिक्षा-सुधा ये तीन ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं।

अन्त में मैं श्रीनृसिंहमन्दिर (भण्डारीपोल-अहमदावाद) के विद्यावयोवृद्ध वैष्णवतत्त्वज्ञ विद्वान् तथा भगवत् भागवतपरा-यण महान्त पं० श्रीपुरुषोत्तमदास जी महाराज का सहस्रशः धन्य-वाद पूर्वक परम उपकार मानता हूँ । जिनके प्रकाशन-व्ययदान की कृपासे यह ग्रन्थरत्न प्रकाशित हुआ है । इति ।

जन्माष्टमी ता० ३-९-१९४२ ई० वंशीवट-खाकचौक श्रीवृन्दावन, यू० पी०	भवदीय—— उपनिषद्भाष्यकार स्वामी श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री 'श्रीवैष्णव' न्यायरत्नवेदान्ततीर्थ तर्कवागीश न्यायवेदान्तकेशरी ।

❀ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ❀

श्री १००८ आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्याय नमः ।

श्री १०८ श्रीटीलाचार्याय नमः । श्री १०८ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥

❀ शिक्षा-सुधा ❀



निरवधि करुणानीरनिधि, रामहिं नमत सप्रेम ।
सन्त-त्राण खलनाशनो, 'टीला' जेहि दृढ़ नेम ॥ १ ॥

विश्व विश्व-जननी तथा, विश्व-भरनि विख्यात ।
राम-महिषि मैथिलि-चरण, 'टीला' नमि हुलसात ॥ २ ॥

प्रस्थानत्रय पर रुचिर भाष्य रच्यो आनन्द ।
श्रीवैष्णवमत जलजरवि, 'टीला' रामानन्द ॥ ३ ॥

वन्दत रामनान्द के 'टीला' पद अभिराम ।
यतिपतितनु धरि अवतरे पूर्ण ब्रह्म श्रीराम ॥ ४ ॥

परमगुरुहिं 'टीला' नमै, नित्य अनन्तानन्द ।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, मिलै अनन्तानन्द ॥ ५ ॥

कृष्णदास पयहारि गुरु, प्रणमौं बारम्बार ।
रामभक्ति 'टीला' लह्यो, जिनकी कृपा अपार ॥ ६ ॥

अमर निरन्तर होनहित, निदरि सुधा सुरलोक ।
शास्त्रसिन्धु-शिक्षासुधा, 'टीला' पीवत लोक ॥ ७ ॥

'टीला' ब्रह्ममुहूर्त्त मँह, उठि सुमिरहु सियराम ।
शौच क्रिया करि करहु शुभ, दतुवन अति अभिराम ॥ ८ ॥

पूतनीर सों स्नान करि, टीला शुभपट धारि ।
ऊर्ध्वपुण्ड्र श्रीयुत करहु, सियाराम-उर धारि ॥ ६ ॥
'टीला' सन्ध्या करि पठहु, श्रीरामस्तवराज ।
रामानन्दस्तोत्र पठि, अर्चहु सियरघुराज ॥ १० ॥
मन्त्रराज जपि पुनि करहु, रामायण को पाठ ।
'टीला' व्यवहृति पूर्व कुरु, भाष्यभास्करहु पाठ ॥ ११ ॥
त्यागि शास्त्रविधि जो पुरुष, निज इच्छा वश होइं ।
'टीला' तिनकी परमगति,सुख औ सिद्धि न होइं ॥ १२ ॥
कर्त्तव्याकर्त्तव्य में, यहि ते शास्त्र प्रमान ।
सदाचार पालत सदा, 'टीला' सन्त सुजान ॥ १३ ॥
यज्ञ विविध शुभ तीर्थ जो, तथा वेद क्षिति माहिं ।
सदाचार ते हीन कहँ, 'टीला' रक्षत नाहिं ॥ १४ ॥
पर-तिय पर-नर निरत जो, 'टीला' ते नरनारि ।
इह अपयश लहि नरक महँ, सह यमगणकी मारि ॥१५॥
देव वेद द्विज तीर्थ गुरु, सन्त पतिव्रततीय ।
तपो यज्ञ व्रतशील ये, 'टीला' नहिं वचनीय* ॥ १६ ॥
'टीला' परहित के सदृश, यहि जग पुण्य न कोइ ।
परहिंसा के सरिस पुनि दारुण पाप न होइ ॥ १७ ॥
देव देव-गृह विप्र गुरु, गो यति तपसी सन्त ।
इनहिं देखि सत्पुरुष जो, 'टीला' नमत तुरन्त ॥ १८ ॥
हरि गुरु वैष्णव धर्म की, निन्दा विलसित ग्रन्थ ।
'टीला' कबहुँ न मानिये यही महाजन-पन्थ ॥ १६ ॥
नयन निरखि पुनि पद धरहु, पयहिं पियहु पटछानि ।
'टीला' मनसा पूत कुरु, सत्यपूत वद वानि ॥ २० ॥

*वचनीय = निन्दनीय ।

देश समय अनुसार कहे, 'टीला' सुख यश होय।
देशकाल अनुसरे विन, भाषत अनहित होय ॥ २१ ॥
क्षमा विभूषण वीर को, धनिक विभूषण दान।
दया विभूषण सन्त को, 'टीला' कहत सुजान ॥ २२ ॥
तप-क्षय 'टीला' विस्मिते यज्ञ अनृत ते क्षीण।
द्विज-निन्दा ते आयु तिमि, दान कथनते क्षीण ॥ २३ ॥
'टीला' वैष्णवजनन के, उभय कार्य निर्धार।
रामरामजन-भक्ति अरु, सर्वजीव-उपकार ॥ २४ ॥
हर्षत 'टीला' अन्तर्दिन, राम मिलन के हेत।
कुसुम-कली छनछन मुदित, यथा खिलन के हेत ॥ २५ ॥
उन्नति-पद शुभ कीर्तियुत 'टीला' जीवन-मूल।
गौरवयुत शिर चढ़न हित, फूलत लतिका फूल ॥ २६ ॥
'टीला' वैभव रामसह, राम विना सब सून।
रवि उदये विकसत सकुच, अथये कमल प्रसून ॥ २७ ॥
रामनाम सुख-धाम भजु, करि श्रद्धा विश्वास।
'टीला' का विश्वास पुनि, आवै निकरो श्वास ॥ २८ ॥
'टीला' चञ्चल सर्वदा, जीवन जोबन चित्त।
प्रभुता औ छाया तथा काञ्चनादि सब बित्त ॥ २९ ॥
'टीला' सुख उपकार ते दुःख करत अपकार।
शीस चढ़त चन्दन सुघड़, तपि घन पिटत कुठार ॥ ३० ॥
त्यागि विविधविध पाप, पुनि भजहु राम सुख-मूल।
'टीला' शूल बचाय बुध, चयन करत जिमि फूल ॥ ३१ ॥
श्रवण सफल सुनि हरि कथा, नयन निहारे राम।
'टीला' मस्तक हरि नमे, जीभ उचारे राम ॥ ३२ ॥
'टीला' यहि जग वस्तु सब, पुनि-पुनि आवत जात।

जाके पुनि आवत नहीं, यौवन ऐसो जात ॥ ३३ ॥
'टीला' तनु-तुम्बा मिलो, उतरन भव-जलपार।
विषय-राग वश फोरि तेहि, बाँध्यो तृष्णा तार ॥ ३४ ॥
'टीला' राजा राम का, जन रंजन ही काम।
पै प्रभु-जन बनिबो कठिन, तजि काञ्चन सुठि वाम ॥ ३५ ॥
प्रभुपद-रति तनुकुटुम-रति, युगपत§ दोउ न होय।
गाल फुलाउब हँसब जस, 'टीला सङ्ग न होय ॥ ३६ ॥
वृथा आयु यश भजन बिन, नरतनु बिन उपकार।
वृथा वित्त बिन दान यह, 'टीला' आगम सार ॥ ३७ ॥
कामन के उपभोग से, काम शान्त नहिं होय।
'टीला' ज्यों घृत-होम से, पावक वर्द्धित होय ॥ ३८ ॥
काम क्रोध अरु लोभ ये, तीन नरक के द्वार।
'टीला' सुरपुर-द्वार पुनि, दया दान उपकार ॥ ३९ ॥
सन्तोषामृत तृप्त कहँ, टीला जो सुख होय।
स्वप्नेहु सो किमि लुब्ध कहँ, घर घर भटकत होय ॥ ४० ॥
असत्सङ्ग सम विष नहीं, बन्ध न मोह समान।
'टीला' शत्रु न कोप सम, निन्दा पाप समान ॥ ४१ ॥
अनाचाररत पुरुष कहँ, जो नर वर्जत नाहिं।
चौथाई ते भोगते, 'टीला' पापन माहिं ॥ ४२ ॥
'टीला' रघुवर कोपिते, भूप होय अति रङ्क।
सन्तोषे रघुनाथ के, भूप होय अति रङ्क ॥ ४३ ॥
तारे गणिका, गीध, गज, शवरी, ऋषि प्रह्लाद।
रघुपति-करुणा के नहीं. "टीला" कुछ मर्याद ॥ ४४ ॥
'टीला' रघुवर-चरण-रज, सकल सुखन को हेतु।

---

§ युगपत – एक साथ।

धूमकेतु अघपुञ्ज को, भवसागर को सेतु ॥ ४५ ॥
भय-कारण निजदोष का, 'टीला' अनुसन्धान ।
सीतापति-शुभगुणन का, सोई अभय-निदान ॥ ४६ ॥
बहु जन्मन के कर्म ही, 'टीला' हानि-निदान ।
निर्हेतुक रघुवर-कृपा, प्राप्ति-हेतु पहिचान ॥ ४७ ॥
चिन्तत रघुवर दयानिधि, 'टीला' निखिलोद्धार ।
राम पतन मम कीन इमि, चिन्तत नहिं उद्धार ॥ ४८ ॥
सीतापति-पद-पद्ममधु, पान मत्त मन होय ।
तौ 'टीला' मनसिज-धनुष, धुनि सुनि मोह न होय ॥ ४९ ॥
कलकाकली कटात्त औ, मलयज शीत बयारि ।
'टीला' जीतन कहँ गहहु, राम-भजन तरवारि ॥ ५० ॥
हरित बरन शुक कीन जो, 'टीला' हंसहु श्वेत ।
मोर विचित्रित रच्यो सोइ, भरन करैं कार हेत ॥ ५१ ॥
वृथा भटकिबो वृत्ति हित, 'टीला' तजि निज-नाथ ।
भक्त-उपेत्ता करहिं किम, विश्वम्भर रघुनाथ ॥ ५२ ॥
रामजानकी-नौमि अरु, नरसिंह चौदस जान ।
कृष्णाष्टमी उपेन्द्र की, टीला' द्वादशि मान ॥ ५३ ॥
माघ-कृष्ण-सप्तमि सुभग, रामानन्द-जयन्ति ।
'टीला' मङ्गल-करनि शुचि, धर्म-विजय-वैजन्ति ॥ ५४ ॥
अरु एकादशि करहिं युग, 'टीला' जो प्रतिमास ।
तिनहिं अमङ्गल यम-व्यथा, स्वप्नेहु माहिं न भास ॥ ५५ ॥
लखि धनयौवन-लालमा, मन भूलो जनि भूलि ।
"टीला" जग उद्यान बहु, सूखे रँग-रँग फूलि ॥ ५६ ॥
रसा रसातल जात है, पापी जन के भार ।
"टीला" गठरी पाप की, शिर पर लेत गँवार ॥ ५७ ॥

यदि बिगड़ो धनदेह तो, कुछ नहिं बिगड़ो जान।
'टीला' बिगड़ो धर्म यदि, सब कुछ बिगड़ो जान ॥ ५८ ॥
लाभ-मूल निर्मानता, हानि-मूल अभिमान।
धर्म-मूल 'टीला' दया, कीर्ति-मूल सन्मान ॥ ५९ ॥
बिसरत नहिं जो राम तेहि, बिसरत नहिं श्रीराम।
बिसरत 'टीला' राम जो, बिसरत तेहि श्रीराम ॥ ६० ॥
'टीला' भजत सकाम तो, मिलत काम नहिं राम।
राम भजत निष्काम तो, मिलत कामसह राम ॥ ६१ ॥
अज्ञ जीव यद्यपि हनहिं, उर महँ अघशर-ग्राम।
वशीकरन 'टीला' धरत दयाकवच श्रीराम ॥ ६२ ॥
'टीला' प्रियतम-देश-गति, जो निज-करगत होति।
अली गये तो कुसुम की, कली न व्याकुल होति ॥ ६३ ॥
राव रङ्क सब जीव पै, सम सीतापति-प्रेम।
राम-द्वार 'टीला' चढ़त, ताम रजत मणि हेम ॥ ६४ ॥
'टीला' रहनि सुहाति अति, पावक-पिंजरा बीच।
रामविमुख जन बीच अति, दहति सुचन्दन-कीच ॥ ६५ ॥
मन ते मनसिज तजि रटहु, 'टीला' निशिदिन राम।
यथा हृदय सरसिज बनहि, सियसियवर को धाम ॥ ६६ ॥
"टीला" बाणहुँ ते विषम, परुषवाणि को घाव।
मिटत वाणि को घाव नहिं, मिटत वाण को घाव ॥ ६७ ॥
दया-धाम सिया राम तजि मनुज-भजन लवलीन।
सेवहिं गर्दभ गाय तजि, 'टीला' ते मतिहीन ॥ ६८ ॥
भगवत् भगवत्-दास अरु, निज-देशिक आचार्य।
चारि चरण-रति सर्वदा, 'टीला' साधति कार्य ॥ ६९ ॥
'टीला' जगविख्यात यह, जलजहिं जल ते होत।

राम-पादपाथोज से, अचरज सुर-सरि होत ॥ ७० ॥
सीतापति-पदपद्म-रज, परसि तरी मुनि-तीय।
'टीला' लीला राम की, अति अद्भुत कमनीय ॥ ७१ ॥
मलयागिरि महँ वास करि, नीम सुचन्दन होंय।
'टीला' सन्तन-बीच तिमि, कुजन सुसज्जन होंय ॥ ७२ ॥
दुष्टतर्क जड़ से सुदृढ़, पीन वृक्ष अविवेक।
'टीला' तेहि नाशत सहज, सत्सङ्गति-क्षण एक ॥ ७३ ॥
दैन्य कलपतरु ताप शशि, सुर-सरि नाशत पाप।
'टीला' सत्सङ्गति हरति, दैन्य ताप अरु पाप ॥ ७४ ॥
'टीला' त्यागि कुसङ्ग भल, बन जन्तुन महँ वास।
कलह-प्रवर्धक भजन-हर, असज्जनन को पास ॥ ७५ ॥
हरि प्रापक नहिं यज्ञ श्रुति, अनल अम्बु धन दान।
'टीला' प्रापक राम को, सत्-पद-रेणुस्नान ॥ ७६ ॥
'टीला' कोपितहु किये, सन्त विकृत नहिं होंय।
तृण-उल्का ते उष्ण कहुँ, वारिधि-वारि न होंय ॥ ७७ ॥
चित्र न 'टीला' सन्त यदि, पर-हित तत्पर होंय।
निज-शीतलता-हेतु कहुँ, चन्दन-तरु नहिं होंय ॥ ७८ ॥
कृपा-सदन 'टीला' वदन, सत्य सुधा सम बैन।
सदयहृदय उपकारि कहु, सन्त वन्द्य केहि हैं न? ॥ ७९ ॥
'टीला' निज-अघ सहत प्रभु, भक्त-अहित नहिं क्षम्य।
चरणाघात पर भृगु-क्षमा, दुर्वासा अक्षम्य ॥ ८० ॥
आँख लखत प्रभुमय जगत, लीन विविधविध भोग।
'टीला' योगहु ते अधिक, भक्तन-विषमवियोग ॥ ८१ ॥
प्रेमी-लोचन-वृत्त कुछ, 'टीला' नहिं समुझात।
निशि दिन धारत अश्रु वा, मन्द-मन्द मुसकात ॥ ८२ ॥

हरि-विरही-उच्छ्वास घन, वर्षाऋतु-नभ व्याप ।
लोचन-नीर प्रवाह लखि, 'टीला जलनिधि काँप ॥ ८३ ॥
भूल न 'टीला' सन्त कहँ, निष्किञ्चन निर्धार ।
नयन-नीर-मिस राम पर, मोती वारत वारि ॥ ८४ ॥
साधु सताये हानि त्रय, धर्म अर्थ अरु वंस ।
'टीला' नीके देखलो, रावण कौरव कंस ॥ ८५ ॥
ऊर्ध्वपुण्ड्रधर सन्त कहँ, सेवत करत सुपास ।
सर्व दान को फल मिलत, 'टीला' विनहिं प्रयास ॥ ८६ ॥
'टीला' वैष्णव सन्त कहँ, सेवत जो करि हेत ।
कल्पकोटि वैकुण्ठ वसि, अन्त जात साकेत ॥ ८७ ॥
'टीला' वैष्णव श्राद्ध महँ, बोलि जिमावत जोय ।
कल्प कोटि तेहि के पितर, लहत तृप्ति दुख खोय ॥ ८८ ॥
राम-भक्ति कुरु मुक्ति की, आशा मन ते टारि ।
'टीला' एक मियान में, रहइं न दुइ तरवारि ॥ ८९ ॥
राग करत रघुनाथ से, तेहि नहिं जग-अनुराग ।
रागजु 'टीला' जगत सन, नहिं रघुपति-अनुराग ॥ ९० ॥
'टीला' भक्ति प्रपत्ति दोउ, भव-उतरन दृढ़ नाव ।
सहस नरन महँ कोउ इक, राम-कृपा सों पाव ॥ ९१ ॥
हृदय-वासना भक्त की, भक्तिहि करति विनाश ।
जिमि 'टीला' निज-वत्स गो चाटि करति मलनाश ॥ ९२ ॥
'टीला' ऋषि श्रुत्यादि के, भिन्न-भिन्न बहु पन्थ ।
धर्म गुहाहित-मिलन को एक महाजन पन्थ ॥ ९३ ॥
हरि हरि-जन जहँ पूज्य सो, निष्कण्टक शुभ पन्थ ।
आगम जो रघुनाथ बिन, 'टीला' सोइ कुपन्थ ॥ ९४ ॥
काग-घाट कवि-काव्य जहँ, 'टीला' प्रभु-यश नाहिं ।

हरि-यश-मानस त्यागि तहँ, सन्त हंस नहिं जाहिं ॥ ९५ ॥
गगन-कुसुम सम जानिये, 'टीला' सो विज्ञान।
सीतापति जहँ विषय नहिं, नहिं तहँ सुख लवमान ॥ ९६ ॥
राम-रूप गुन नाम तजि, शुष्कवाद का सेत।
निश्चय तुष को खाँडिबो, 'टीला' तण्डुल हेत ॥ ९७ ॥
'टीला' यहि जग जीव के, नाहिं भुजङ्गम काल।
हरि-प्रसङ्ग को विरह सोइ, विषधर व्याल कराल ॥ ९८ ॥
राम-चरित पीयूष महँ, उपजावत नहिं प्रेम।
तौ 'टीला' ते व्यर्थ सब, योग यज्ञ व्रत नेम ॥ ९९ ॥
'टीला' मानस मलिन जल, शरद् कथा रघुनाथ।
निर्मल करि शोभित करै, प्रेमाम्बुज के साथ ॥ १०० ॥
राम-चरित सुरसरित सम, 'टीला' यह अविवेक।
देखे न्हाये पिये इक, सुनतहि अघ हर एक ॥ १०१ ॥
सुनत काम-हर मोक्ष-प्रद, राम-चरित-पीयूष।
तेहि समान किमि काम प्रद, 'टीला' सुर-पीयूष ॥ १०२ ॥
रसिक कथा रघुनाथ की सुनि जेहि प्रेम न होय।
'टीला' सो नर भाग्यहत, पशु या पाहन होय ॥ १०३ ॥
सुगुरु भक्त भगवन्त की, जेहि के भक्ति न होय।
'टीला' ऐसे पुरुष से, कथा सुने च्युति होय ॥ १०४ ॥
राम नाम बल बहु तरे जलनिधि पर पाषान।
'टीला' ते नहिं तरहिं किम, जो चेतन मतिमान ॥ १०५ ॥
अन्त दिवस जब सब रटहिं, सत्य नाम श्रीराम।
'टीला' तब अब ते रटहु, राम राम सियाराम ॥ १०६ ॥
इन्द्रिय तक्षक विषय विष, 'टीला' तनु वल्मीक।
निशिदिन रघुपति-नाम की, राखहु भेषज नीक ॥ १०७ ॥

रामनाम यश मणि खचित, 'टीला' काव्य बखान।
सुनहिं सुनावहिं प्रेम से, कीर्त्तन करहिं सुजान ॥ १०८ ॥
'टीला' कृच्छ्रादिक किये, जात पाप नहिं मूल।
रामनाम-कीर्त्तन सदा, नाशत पाप समूल ॥ १०९ ॥
अमित माधुरी-धाम तजि, 'टीला' रघुवर नाम।
रसना रस खोजति फिरति, वृथा रसज्ञा नाम ॥ ११० ॥
सोइ सुन्दर दिन लगन, शुभ ग्रहविद्याबल सोइ।
जब सीतापति-नाम का, 'टीला' सुमिरन होइ ॥ १११ ॥
काय वचन मन से किये, पाप-पुञ्ज जग माहिं।
'टीला' सुमरिन राम को, नाशत इक छन माहिं ॥ ११२ ॥
'टीला' जीवन-श्वास-छन, मणिमाणिक-समुदाय।
सियसियपति स्मृति तन्तु में, पोहत सुषमा पाय ॥ ११३ ॥
सुमिरत सुमिरावत सदा, 'टीला' हरि-गुन नाम।
धनि तिन उत्तम जनन के, मात पिता गुरु ग्राम ॥ ११४ ॥
सुधा-सिन्धु सियाराम-पद, तजि सुख-साधन लीन।
जल मथि घृत काढ़न चहहिं, 'टीला' ते मतिहीन ॥ ११५ ॥
आराध्यो नहिं राम पद, जन्म वितायो व्यर्थ।
जनन मरन कैसे तरन, 'टीला' होय समर्थ ॥ ११६ ॥
नरक-अतिथि कहँ निरख, करि कहत नारकी बात।
'टीला' क्या सेई नहीं, रघुवर-पद-रज तात ? ॥ ११७ ॥
'टीला' भव पाथोधि में, आशा जल-समुदाय।
मन-विकार आँधी प्रबल, राग भँवर चकराय ॥ ११८ ॥
त्रिविधिताप लहरी बिकट, ममतादिक जल-जीव।
'टीला' हरि-पद पोत बिन, पार होय किमि जीव ॥ ११९ ॥
देव-देव-अरि मनुज वा, यक्ष और गन्धर्व।

सेवत 'टीला' राम-पद स्वस्तिमन्त हों सर्व ॥ १२० ॥
राजरोगरिपुमृत्यु-भय, सबहिं सबहि थल होय।
'टीला' निर्भय जीव यह, राम-चरन-तर होय ॥ १२१ ॥
बाघ वृद्धपन आधि दव, व्याधि प्राण-हर व्याध।
'टीला' जीवन बन गहन, रामचरन आराध ॥ १२२ ॥
रघुपति-चरण सरोज को, मधु अति अद्भुत होय।
'टीला' मोहत विन पिये, पिये मोह नहिं होय ॥ १२३ ॥
वामन वामन-वपुहु महँ, तीन लोक जो नाप।
रामचरण 'टीला' शरण, भीति कौन यदि पाप ॥ १२४ ॥
एक राम-अर्चनहिं ते, सब के अर्चन होय।
'टीला' सींचे मूल के, डाल पात दृढ़ होय ॥ १२५ ॥
जो करते सियराम के, मन्दिर को निर्मान।
'टीला' तिनके पुण्य नहिं, शेषहु सकत बखान ॥ १२६ ॥
देव-महोत्सव करत नहिं, देव-द्रव्य कहँ पाय।
'टीला' सो दुख पाइ इह, अन्त नरक महँ जाय ॥ १२७ ॥
पञ्चामृत-हित सर्वदा, 'टीला' पालहु धेनु।
सहज दूर हों दुरित सब, लागत गो-पद-रेनु ॥ १२८ ॥
'टीला' प्रभु पूजत डरहु, वैभव विन केहि काम।
पत्र पुष्प फल पयहु ते, रीझत सीताराम ॥ १२९ ॥
'टीला' उत्तम कुसुम सो, जो निज कर ते आन।
मध्यम ताही जानिये' जो द्रव्यन ते आन ॥ १३० ॥
गन्ध रहित दुर्गन्ध युत, शुष्क और आघ्रात।
'टीला' वासी भूमिगत, अरु श्मशान में जात ॥ १३१ ॥
अन्यदेव-निर्माल्य अरु, अर्क कनेर शिरीस।
'टीला' इतने कुसुम नहिं, चढ़त ईश के शीस ॥ १३२ ॥

सन्ध्या अरु संक्रान्ति पुनि, द्वादशि औ पद्यान्त ।
'टीला' तुलसी-चयन-हित, वर्जत सन्त महान्त ॥ १३३ ॥
'टीला' सात्विक सन्त नित, करत राम-हित पाक ।
निश्चय ते अघ खात जो, निज कारण कर पाक ॥ १३४ ॥
सीताराम निवेद्य पुनि, खाद्य पेय पट लेत ।
'टीला' विना निवेद्य कछु, वैष्णव कबहुँ न लेत ।। १३५ ॥
मास षट्क उपवास ते, 'टीला' जो फल होत ।
विष्णु निवेदित सीत से, निश्चय सो फल होत ॥ १३६ ॥
'टीला तुलसी-पत्र जो, विष्णु निवेदित होय ।
वदन-शुद्धि-हित खात तेहि, चान्द्रायण-फल होय ॥ १३७ ॥
वन्दत श्री सियराम के, वन्दत तीनहु लोक ।
वन्दे विन सियरामके, 'टीला, शोकहि शोक ॥ १३८ ॥
'टीला' पाप पहाड़ मम, विनवहुँ हे सियनाथ !
जन्म जन्म, जनि जन्म इक, पद-वन्दी कुरु नाथ !! १३९ ॥
रघुवर ! कौन सुपुराय जो, कुण्डल चूम कपोल ।
दोष कौन 'टीला' भला, लखत न लोचन लोल ।। १४० ॥
पाप चक्रवर्त्ती महा, 'टीला' नाथ ! अनाथ ।
निज-पद-सेवी करहु तुम, चक्रवर्त्ति रघुनाथ ।। १४१ ॥
'टीला' करत निहोर अति, हे चित चतुर चकोर ।
सब तजि नित निरखत रहहु, रामचन्द्र विधु ओर ॥ १४२ ॥
दास्य भक्ति रघुनाथ की, सबहिं बतावति दास ।
'टीला' रघुपति से बड़े, श्रीरघुपति के दास ।। १४३ ॥
रामजानकी-दास के, माया निकट न जाय ।
'टीला रघुपति-दास के, मारुत सदा सहाय ।। १४४ ॥
भगवत् के कैङ्कर्य सम, 'टीला' यज्ञ न और ।

हरि-किङ्कर यश द्रव्य अरु, सुख पावत चहुँ ओर ॥१४५॥
'टीला' धनि हरिसख्यकृत, जीवनको शुभ योग।
अन्त लहैं सायुज्य पद, भोगि सकल सुख-भोग ॥ १४६ ॥
'टीला' तनु लहि जीवगण, भजन त्यागि बौराहिं।
प्रबल राम-माया-सदृश, त्रिभुवन महँ कोउ नाहिं ॥१४७॥
दैवि त्रिगुण माया-तरन, जग नहिं आन उपाय।
'टीला' गहि सियवर-शरन, सहजहिं ते तरि जाय ॥ १४८॥
'टीला' भुज-बल चहहिं सुख, सुखद छाँड़ि रघुवीर।
काचे घट ते चहहिं ते, तरन पयोधि गँभीर ॥ १४९ ॥
भरत भाव-निधि जरत लखि, निज-वशाताऽऽतप माहिं।
'टीला' रघुवर दीन-निधि, दीन पादुका-छाहिं ॥ १५० ॥
पुरस्कार करि जानकिहिं, शरन राम की नीक।
'टीला' अति अघ में बच्यो, शक्र-तनुज-शिर ठीक ॥१५१॥
सीता-सन्निधि लहे गुह, लखन विभीषण राम।
,टीला' तेहि विन हत भयो, रावण सह जन ग्राम ॥ १५२॥
'टीला' भक्त प्रपन्न दोउ, एक ईश के बाल।
विनये ते रक्षत प्रथम, सहजहिं अपर सम्हाल ॥ १५३ ॥
'शरण तुम्हारी' बार इक, इमि वद तजि धन धाम।
'टीला' तेहि सब भूत से, अभय करत श्रीराम ॥ १५४ ॥
शरणागत चातक सदृश, निशिदिन टेरत नाम।
जिमि कपोत तिमि सर्व तजि, 'टीला' रक्षत राम ॥ १५५॥
आनुकूल्य-सङ्कल्प अरु, प्रातिकूल्य का त्याग।
रक्षहिंगे विश्वास इमि, 'टीला' रक्षण माँग ॥ १५६ ॥
आत्म-समर्पण करहु शुभ दीन-भाव के सङ्ग।
'टीला' छः रघुनाथ की," शरणागति के अङ्ग ॥ १५७ ॥

'टीला' राम-प्रपन्न के, द्रम आर्त्त दुह भेद।
देहान्तर-हित शोच इक, अपरहिं धृततनु-खेद ॥१५८॥
दावानल विच हिरन जिमि, छिन-छिन होत दुखार्त्त।
तिमि प्रभु विन पल युग गिनत, तड़पत 'टीला' आर्त्त ॥१५९॥
'टीला' सदा प्रपन्न के, कर्म भक्ति अरु ज्ञान।
सिय सिय-पति सेवा तथा, रति बोधान्वित जान ॥१६०॥
आत्म-समर्पण यज्ञ महँ, आत्मा है यजमान।
'टीला' सात्विक शुद्ध तहँ, श्रद्धा कान्ता जान ॥ १६१ ॥
उर वेदी वपु काष्ठ कुश, लोम शिखा श्रुति-ज्ञान।
हृदय यूप 'टीला' तहाँ, क्रोधहिं पशु पहिचान ॥ १६२ ॥
आज्य काम अरु अग्नि तप, दमहिं शमयिता जान।
'टीला' होता प्रिय वचन, उद्गाता शुभ प्रान ॥ १६३ ॥
मन ब्रह्मा अध्वर्यु दृक्, श्रोत्र बर्हि पहिचान।
देह-धरण दीक्षा हविः, अशनहिं 'टीला' जान ॥ १६४ ॥
सञ्चरणादि प्रवर्ग्य अरु, सोम-पान पय-पान।
उपसद रघुपति-रूप में, रमणहिं 'टीला' जान ॥ १६५ ॥
ज्ञान हवन अरु समिध् जो, प्रात साँझ अदनीय।
व्याहृति आहुति मुख तथा, 'टीला आहवनीय ॥ १६६ ॥
सायं प्रात मध्य दिन, सवन सु 'टीला' जान।
पौर्णमास अरु दर्श पुनि, दिवस रात पहिचान ॥ १६७ ॥
'टीला' चातुर्मास्य पुनि, अर्धमास अरु मास।
पशूबन्ध ऋतु अहर्गण, परिसंवत्सर भास ॥ १६८ ॥
सर्व ज्ञानमय यज्ञ यह, अवभृथ मरणहिं जान।
'टीला' विरजा स्नान करि, जन्म जरादिक-हान ॥ १६९ ॥
'टीला' ज्ञानी जानि यहि, देव-अयन तनु त्यागि।

'टीला' वैष्णव-धर्म गहि, जनन मरन-भय जाहिं।
स्खलन पतन-भय धावतहुँ राज-मार्ग महँ नाहिं ॥१७९॥
'टीला' उत्तम शिष्य जेहि, श्रद्धायुक्त विराग।
शान्त दान्त सद्बुद्धि औ, जाके द्वेष न राग ॥ १८० ॥
सन्त-भक्त सत्कर्मरत, मोक्षेच्छुक गतमान।
भोग भोगि सम लखत सो, 'टीला' शिष्य बखान ॥१८१॥
कण्ठी तिलक धराय औ, धनुर्बाण से अङ्क।
'टीला' वैष्णव नाम दै, मन्त्र देय निःशङ्क ॥ १८२ ॥
कण्ठी माला तिलक लखि, नाम सुनत हरिदास।
'टीला' पकरन आय पुनि, यम-गण होत उदास ॥१८३॥
सकल लोक महँ पूज्य हो, ऊर्ध्वपुण्ड्र धरि श्वेत।
चढ़ि विमान महँ अन्त सो, 'टीला' लह साकेत ॥ १८४ ॥
चित्रकूट तुलसी अवध, द्वारावति रज रम्य।
ऊर्ध्वपुण्ड्र लखि भाल महँ 'टीला' यम हो दम्य ॥१८५॥
दान याग तर्पन हवन, 'टीला' तप विकराल।
ऊर्ध्वपुण्ड्र बिन कर्म सब, भस्म होत तत्काल ॥ १८६ ॥
'टीला' शीतल तप्त वा, धनुर्बाण को छाप।
रामोपासन महँ करति, अधिकारी निष्पाप ॥ १८७ ॥
'टीला' जाकी भुजन महँ, धनुर्बाण को अङ्क।
पितर तारि सायुज्य लहि, सो नर हो निःशङ्क ॥ १८८ ॥
हरिआयुधअङ्कित करत, 'टीला' जो शुभकर्म।
सो शतगुन फल देत है, यह शास्त्रन को मर्म ॥ १८९ ॥
'टीला' तुलसी-मूल महँ, सब तीर्थन कर वास।
डार-पात महँ यज्ञ औ, सब सुर करत निवास ॥ १९० ॥
मूलमन्त्र से मन्त्रि शुचि, धूपि गव्य से धोय।

माला हरिहिं निवेद्य धरि 'टीला' वैष्णव होय ॥ १९१ ॥
तुलसी कण्ठे धरत सो, त्रिभुवन कर पुनीत।
ग्रीवा में 'टीला' सदा, धारहु जिमि उपवीत ॥ १९२ ॥
वशीकरन भगवान् के, तुलसी सदा समर्थ।
'टीला' नित धारण करे, नाशति सकल अनर्थ ॥ १९३ ॥
'टीला' वैदिक कर्म की, सिद्धि-हेतु उपवीत।
सकल जीव की मुक्ति हित, तिमि तुलसी सुपुनीत ॥ १९४ ॥
तुलसी-मणिका कण्ठ महँ, जो नर धरत सदाहिं।
तहि समीप 'टीला' कबहु, भूत पिशाच न जाहिं ॥ १९५ ॥
तुलसी कण्ठे नहिं धरी, हिय में धरयो न राम।
'टीला' संसृति-चक्र से, कैसे लहै विराम ॥ १९६ ॥
'टीला' गुरु से बिनु लहे, रामदास्यपर नाम।
फल न मिलत शुभकर्म को, अन्त बँधत यम-दाम ॥ १९७ ॥
रिक्त होत जो मन्दधी, धर्म करत बिनु नाम।
'टीला' सो नर वहिर्मुख, जो बिन संस्कृत नाम ॥ १९८ ॥
बहु जप बहु तप मन्त्र बहु, 'टीला' निपट निकाम।
सकल अर्थ साधत सदा, राममन्त्र सुखधाम ॥ १९९ ॥
सीता-पति श्रीराम जिमि, सब से परे स्वतन्त्र।
तिमि 'टीला' सब मन्त्र पर, षट् अक्षर को मन्त्र ॥ २०० ॥
'टीला' जिमि बट-बीज महँ, बट को वृक्ष समान।
'राँ' बीज-बिच तिमि सकल, राजत जगत महान ॥ २०१ ॥
'टीला' कुरु मन्त्रार्थ का, निशिदिन अनुसन्धान।
देहात्म-भ्रम अन्यथा, युगलसुधांशु समान ॥ २०२ ॥
नाशत सो हति वासना, तनु में आत्म-भ्रान्ति।
'टीला' जिमि हन दोष हनि भेषज युगविधु-भ्रान्ति ॥ २०३ ॥

षट अक्षर-संसिद्धि युत, राम-भक्त जहँ जाहिं।
'टीला' तस्कर काल औ, व्याधि तहाँ नहिं जाहिं ॥ २०४ ॥
माला तुलसी-काष्ठ जो, अष्टोत्तरशत होय।
'टीला' तेहि ते मन्त्र जपि, शुभ अक्षय फल होय ॥ २०५ ॥
कोउ द्वैत अद्वैत कोउ, कोउ कह द्वैताद्वैत।
युक्तियुक्त 'टीला' कहत, श्रौत विशिष्टाद्वैत ॥ २०६ ॥
अर्थ विशिष्टाद्वैत का, 'टीला' कहत सुजान।
भेद न कारणब्रह्म औ, कार्यब्रह्म का जान ॥ २०७ ॥
सूक्ष्म अचित् चित युक्त, श्रीरामहिं कारण जान।
स्थूल अचित् चित् युक्त सोइ, 'टीला' कार्य बखान ॥ २०८ ॥
'टीला' अचित् अचेतनहिं, भाषत चतुर सुजान।
त्रिगुण शुद्धसत्त्व काल धी, अचित् चतुष्टय मान ॥ २०९ ॥
ज्ञाता पन से रहित जो वस्तु अचेतन सोय।
'टीला' ताही हेतु सो, कर्तृ भोक्तृ नहिं होय ॥ २१० ॥
जीव कर्मवश नहिं लखत, निज निज-ईश स्वरूप।
त्रिगुन तत्त्व 'टीला' यतः, पर्दा बनो अनूप ॥ २११ ॥
सत्त्व रजस् अरु तमस् इन, तीन गुणन-अधार।
मिश्रसत्त्व 'टीला' कहहिं, सन्त दया-आगार ॥ २१२ ॥
सत्त्व प्रकाशक हेतु अरु, रजो रागदुख-हेतु।
तमो गुणहिं 'टीला' कहत आलसनिद्रा-हेतु ॥ २१३ ॥
गुण-समता महँ जग-प्रलय, सृष्टि विषमता माहिं।
'टीला' सीतानाथ की, लीला नहिं समुझाहिं ॥ २१४ ॥
रघुपति के सङ्कल्प से, गुण-वैषम्य महान्।
प्रथम प्रकृति की विकृति तब, 'टीला' होत महान् ॥ २१५ ॥
महत्तत्त्व की विकृति पुनि, अहङ्कार विधि तीन।

सात्त्विक राजस तामसहिं, 'टीला' कहत प्रवीन ॥ २१६॥
प्रथम रुद्र इन्द्रिय करत, राजस होत सहाय।
तन्मात्रा तामस-विकृति, 'टीला' सुन चितलाय ॥ २१७ ॥
चक्षु श्रोत्र अरु त्वचा मन, रसन घ्राण छः जान।
ज्ञानेन्द्रिय 'टीला' कहत, बुध जन परम सुजान ॥ २१८ ॥
वाक् पाणि अरु पाद पुनि, पायु और उपस्थ।
कर्मेन्द्रिय ये पाँच सुन, 'टीला' मन करि स्वस्थ ॥ २१६ ॥
अहङ्कार तामस करत, प्रथम शब्द तन्मात्र ॥
तेहि ते नभ 'टीला' ततः स्पर्श होत तन्मात्र ॥ २२० ॥
सो उत्पादक वायु का, तेहि ते प्रकटत रूप।
रूप करत है तेज जो, 'टीला' भास्वररूप ॥ २२१ ॥
तेहि ते रस रसते उदक, नीर करत है गन्ध।
'टीला प्रकटत वसुमती, वसुधा मात्रा गन्ध ॥ २२२ ॥
'नेह नानास्ति किञ्च' इतिश्रुति न कहति जगझूठ।
जगत्-हेतु पर एक यह, 'टीला साँच न झूठ ॥ २२३ ॥
सूत्रकार 'टीला' कहत, जगत् ब्रह्म-परिणाम।
तत् अनित्य यह नहिं मृषा, किन्तु त्याज्य दुख-धाम ॥२२४॥
जगत् मृषा तो मिटति किमि, जलते लगी पियास।
'टीला' मेटत नाहिं जल, मृगमरीचिकाभास ॥ २२५ ॥
राम-पाद इक विश्व सब, शुद्धसत्त्व पुनि तीन।
मिश्रसत्त्व ते भिन्न सो, 'टीला' दुःख विहीन ॥ २२६ ॥
तीन ओर सीमारहित, 'टीला' नित्यविभूति।
अधो देश माया त्रिगुण, लीला अर्थ विभूति ॥ २२७ ॥
अजड़ अयोध्या सुर-नगर, श्रुति महँ इमि विख्यात।
नित्यमुक्त तेहि नित्य ही, 'टीला' लखि हरषात ॥ २२८ ॥

इन्द्रधनदविधि-लोक के, सर उद्यान निकेत।
'टीला' लागत निरय सम,लखि शुभ सुख साकेत ।।२२६।।
सकल लोक-शेखर सुभग, अवध रामरजधानि।
अवध-वास-गति नहिं लहत, 'टीला' योगिहु ज्ञानि ।।२३०।।
शाक नीर से उदर भरि, सरयू-तीर-निवास।
जो 'टीला' तो तुच्छ सब, इन्द्रब्रह्म-पुर-वास ।। २३१ ।।
सत्वरजस्तमशून्य जो अचित् काल तेहि नाम।
'टीला' प्राकृत वस्तु औ, प्रकृति-विकारक जान ।।२३२।।
क्रीड़ा-परिकर राम को, देह नित्य विभु काल।
आगम औ प्रत्यक्ष का, 'टीला' गोचर काल ।। २३३ ।।
वर्त्तमान अरु भूत पुनि, भावी तीन प्रकार।
काष्ठादिक के भेद बहु 'टीला' काल-प्रकार ।। २३४ ।।
त्रिविध अचित् ये देह ही, 'टीला' होत सदैव।
जीव देह देही उभय, ईश्वर देही एव ।। २३५ ।।
द्रव्य और गुण रूप जो, मणि की प्रभा समान।
'टीला' तेहि विभु द्रव्य कहँ सुबुध बखानत ज्ञान ।।२२६।।
नित्य अजड़ यह ज्ञान है, 'टीला' सुखस्वरूप।
सङ्कोचासङ्कोच ते, निद्रा जागृति रूप ।। २३७ ।।
'टीला' ताही हेतु पुनि, नष्टोत्पन्न-प्रतीति।
विभुज्ञान अणु जीव कहँ, एक कहत अनरीति ।। २३८ ।।
परतन्त्रताविशिष्ट जो, चेतन अणु सो जीव।
नित्य अजड़ 'टीला' तथा, कर्त्ता भोक्ता जीव ।। २३९ ।।
'टीला' धार्य नियाम्य अरु, सीतावर को शेष।
ज्ञानरूप अज ज्ञानधृत, हृद्गत जीव अशेष ।। २४० ।।
देहेन्द्रिय धी प्राण ते, जीवात्मा नित भिन्न।

सुखी-दुखी के भेद सब, 'टीला' जीव विभिन्न ॥ २४१ ॥
तत् त्वं असि यहि वाक्य महँ, राघव तत्पद-वाच्य ।
त्वद्देही रघुनाथ जी, 'टीला' त्वं पद वाच्य ॥ २४२ ॥
यस्यात्मा यह श्रुति कहति, जीवहिं राम-शरीर ।
जग 'टीला' विख्यात यह, देहीभिन्न शरीर ॥ २४३ ॥
अहं भावहू दास का, 'टीला' अवनसि-हेतु ।
तौ पुनि सोऽहं भाव कहँ, कौन कहै भव-सेतु ॥ २४४ ॥
रामभिन्न-शेषत्व अरु, तजि अपनो शेषत्व ।
'टीला' अनुसन्धान करु, सियसियपति-शेषत्व ॥ २४५ ॥
राम-कृपा ते गुरु मिले, 'टीला' अन्तर माँजि ।
लखहु राम-शेषत्वनिधि, भक्ति सुअञ्जन आँजि ॥ २४६ ॥
स्वाभाविक सुखरूपहू, दुखी कर्म-वश होहिं ।
'टीला' सीताराम लखि, स्वानुकूल पुनि होहिं ॥ २४७ ॥
बन्धरहित अरु बद्ध ये, दुइविध जीव विभेद ।
नित्य मुक्त 'टीला' उभय, बन्धरहित के भेद ॥ २४८ ॥
भक्तिप्रीत हरि-कृपा ते, 'टीला' तजि संसार ।
निरुपाधिक कैङ्कर्ययुत, मुक्त विगत दुखभार ॥ २४९ ॥
राम-विमुख आचरत नहिं, मारुति आदिक नित्य ।
अतः विशदधी लहत नहिं, 'टीला' वपुष अनित्य ॥ २५० ॥
दुःख-हेतु विन निरतिशय, अक्षय जो आनन्द ।
मोक्ष कहत आचार्यवर, 'टीला' रामानन्द ॥ २५१ ॥
'टीला' उभय विभूति युत, राम मुक्तगण-भोग्य ।
याते सो सायुज्य नहिं, तारतम्य के योग्य ॥ २५२ ॥
बद्ध जीव 'टीला' लहहिं जननमरण-संयोग ।
आदिरहित निजकर्मवश, सुख दुख योग वियोग ॥ २५३ ॥

ईश्वर राम स्वतन्त्र अरु, विभु चेतन भगवान ।
परब्रह्म सर्वज्ञ अज, 'टीला' सूक्ष्म महान ॥ २५४॥
'टीला' रघुवर वरदवर, शास्त्रमात्र से ज्ञेय ।
निष्कर्षक ते भिन्न सब, शब्दन के अभिधेय ॥ २५५ ॥
सगुन अगुन श्रीराम को, श्रुतिप्रतिपादित रूप ।
दिव्यगुणनयुत हेयविन, 'टीला' रघुपति-रूप ॥ २५६ ॥
ज्ञान सत्यआनन्दता, अनन्तत्व अमलत्व ।
रूपनिरूपक धर्म यह, 'टीला' आगम-तत्त्व ॥ २५७ ॥
'टीला' सीतानाथ के, ज्ञानबलादिक धर्म ।
गुनहु निरूपितरूप के, ये विशेषकर धर्म ॥ २५८ ॥
शक्ति शील सौन्दर्य को, अक्षय अम्बुधि होय ।
दोष क्लेश जहँ लेश नहिं, 'टीला' को प्रभु सोय ॥ २५९ ॥
'टीला' सीतानाथ लखि, सब संशय हों छिन्न ।
क्षीण सकलविध कर्म अरु, हृदय-ग्रन्थि हों भिन्न ॥२६०॥
*मारामारामरामर,　　　रामारामाराम ।
'टीला' रघुवर दयनिधि, महामहिम सुख-धाम ॥ २६१ ॥
'टीला' रघुवर सदृश को, और कृपा-कूपार ।

---

*मारामार = मार आ मार = काम को अच्छी प्रकार से मारने वाले अर्थात् मन्मथ के भी मन्मथ । अमरामर = अमरों के भी अमर अर्थात् देवों के भी देव । रामाराम = रामा (श्री जानकी जी) से आ राम = मनोहर । आराम = अच्छीप्रकार रमण करने वाले अथवा आनन्दस्वरूप । दया के निधि भगवान् श्रीरामचन्द्रजी महामहिमा वाले हैं और सुख के धाम हैं ।

उपनिषद्भाष्यकार स्वामी श्रीवैष्णवदास जी शास्त्री ।

अँसुवन धोवत गीध-तनु, धूलि जटा सों झार ॥ २६२ ॥
कल्पवृक्ष-आरम औ, सकललोक-अभिराम ।
आपदनिकर-विराम अति, 'टीला' राम ललाम ॥ २६३ ॥
भक्त-अपाय भुजङ्ग के, गारुड़मणि रघुवीर ।
भक्त-नयन सारङ्ग के, 'टीला' जलधर धीर ॥ २६४ ॥
जगत् जोनि शुभ जोति श्री, सीताराम विलोकि ।
'टीला' मन महँ मोदि अति, लहति त्रिलोकी कोकि ॥२६५॥
सियसियवर लीला ललित, नाम रूप औ धाम ।
चारु चारि ये नित्य पुनि, 'टीला' अति अभिराम ॥२६६॥
जान जानकीराम दोउ, "टीला" नित्य अभिन्न ।
यथा भानु-कर भानु से, होत न कबहूँ भिन्न ॥ २६७ ॥
वपुष अनुग्रहमय धरति, निग्रह कबहुँ न जान ।
'टीला' जग-हित निरत नित, सिय सम हितू न आन ॥२६८॥
सिय-करुणा करुणारहित, सियहिं भूमि अवतारि ।
पीड़ति अति तेहि ते सकति, 'टीला' जग-दुख टारि ॥२६९॥
राम-रूप-माधुर्य लखि, चित्रलिखित सब होत ।
अचरज "टीला" चित्त चल, सहज समाहित होत ॥२७०॥
जगरावण रावण-मरण, "टीला" अजगव-ध्वंस ।
अजहूँ अज-सुत-सुत भयो, अति अचरज रघुवंस ॥२७१॥
उपल कमल सम जलधिमहँ ; तरिबो अचरज नाहिं ।
जगत-उदय लय शक्ति जेहि, "टीला" सैनन माहिं ॥२७२॥
पूर्व रहत सद्रूप ही, अद्वितीय श्रीराम ।
"टीला" बहुविध होत पुनि, लीला हेतु ललाम ॥ २७३ ॥
लखि साधन विन प्रलय महँ, "टीला" जीव अचेत ।
करुणा करुणासिन्धु करि, करण कलेवर देत ॥ २७४ ॥

'टीला' जग श्री राम का सद्वारक परिणाम।
तन्तुजाल विख्यात जिमि, मकड़ी का परिणाम ॥ २७५ ॥
क्यारी महँ जल पैठि जिमि, 'टीला' रक्षत धान्य।
सृष्ट जगत् महँ पैठि तिमि, रक्षत राम वदान्य ॥ २७६ ॥
विषयी इन्द्रिय देह को, संहारत रघुनाथ।
पिता विनय बिन पुत्र का, 'टीला' बाँधत हाथ ॥ २७७ ॥
पर व्यूह औ विभव अरु, हार्द मूर्ति अवतार।
"टीला" रक्षक राम की, स्थिति है पाँच प्रकार ॥ २७८ ॥
नित्यधाम महँ मुक्तगण, सेवित दिव्यस्वरूप।
'टीला' सीतानाथ को, जानहु सो पर रूप ॥ २७९ ॥
बिम्बाधर सरसिज नयन, नवनीरद इव श्याम।
'टीला कब अवलोकिहौं, कोटि कामजित् राम ॥ २८० ॥
रामसियहिं सिय राम लखि, मन्द मन्द मुसकात।
युगल-माधुरी-छवि लखन, 'टीला' हिय अकुलात ॥२८१॥
कब इन नयननि देखिहौं, 'टीला सहज ललाम।
क्रीड़त क्रीड़ा-भूमि महँ, श्रीसीता सह राम ॥ २८२ ॥
वासुदेव षड्गुण सहित, प्रथम व्यूह पहिचान।
सङ्कर्षणहिं द्वितीय लख, 'टीला' युत बलज्ञान ॥ २८३ ॥
'टीला' श्री प्रद्युम्न महँ, वीर्यैश्वर्य बखान।
श्री अनिरुद्ध तुरीय पुनि, शक्ति तेजयुत जान ॥ २८४ ॥
अवतारी श्रीराम का, मत्स्यादिक अवतार।
'टीला' जानहु विभव बहु, गिनत न आवै पार ॥ २८५ ॥
मत्स्य कूर्ममनुजादि-तनु, लेत राम अवतार।
'टीला' रक्षत साधुजन, हरत पाप भूभार ॥ २८६ ॥
अवतारहु महँ राम अज, 'टीला' पूर्ण कलेश।

मांसमेदविनु दिव्यवपु, व्यापक श्री सर्वेश ॥ २८७ ॥
अन्तर्हित घृत दूध महँ, तिमि जीवन महँ राम ।
'टीला' मन्थन-दण्ड मन, मथन करहु अविराम ॥ २८८ ॥
श्री अर्चा अवतार शुभ, योगिवृन्द-संवेद्य ।
'टीला' जीवन सफल कुरु, षोडशविधिहिं निवेद्य ॥२८९॥
आकुल दर्शन-हेतु लखि, रघुपति सर्वशरीर ।
'टीला' अर्चा-रूप धरि, हरत भक्त की पीर ॥ २९० ॥
'टीला' मारत मार तकि, विषय बाण विषअक्त ।
रूपमाधुरी मूर्ति की, पी जीवत हरि-भक्त ॥ २९१ ॥
स्नानाशनशयनादि महँ, अर्चक के परतन्त्र ।
अस्वतन्त्र इव मूर्ति महँ, 'टीला' राम स्वतन्त्र ॥ २९२ ॥
दयाधीन अघ भूलि सब, अर्चातनु श्रीराम ।
स्वामिभाव के साथ दें 'टीला' सब विधि काम ॥२९३॥
षाड्गुण्य सब ते अधिक, मन्त्रमूर्ति महँ होत ।
वात्सल्यकृपा के रूप दोउ, 'टीला करत उदोत ॥ २९४ ॥
सर्व-वन्धु सवपाप-हर, सर्वदेव-अभिवन्द्य ।
अर्चहिं सीताराम जो, ते "टीला" नित वन्द्य ॥ २९५ ॥
*स्वाध्याय इज्या तथा, अभिगमनोपादान ।

---

*स्वाध्याय = षडक्षर मन्त्रराज श्रीराममन्त्र, द्वय तथा चरम-मन्त्रादि का जप, पुरुषसूक्त श्रीसूक्त श्रीरामस्तवराजादिस्तोत्रपाठ, भगवन्नाम संकीर्तन तथा तत्त्वप्रतिपादक आनन्दभाष्य उपनिषद्भाष्य गीताभाष्यादि शास्त्रों का विवेचन सहित अभ्यास स्वाध्याय है। 'इज्या' = श्रीसीताराम जी का अर्चन। ३--अभिगमन = भगवन्मन्दिर, मार्ग तथा परिक्रमा आदि के मार्जन तथा लेपनादि। ४-- उपादान = गन्ध पुष्प चन्दन इत्यादि भगवदर्चनसामग्री का प्राप्त करना। ५-योग = श्रीसीतारामजी के

'टीला' पञ्चम योग ये, राम-उपासन जान ॥ २९६ ॥
×अनुद्धर्ष अभ्यास औ, अनवसाद कल्यान।
क्रिया विवेक विमोक ये, भक्तिद "टीला" जान ॥२९७॥
प्राप्ता प्राप्य उपाय अरु, फल विरोधि शर मान।
'टीला' भाषत वेद सब, मुनि इतिहास पुरान। २९८॥
विषय विषम-विष-जन्तु, इह 'टीला' व्याप्त महान।
सन्त-वचन भेषज पियहु, चाहत यदि कल्यान। २९९॥
'टीला' धनि धनि सन्तजन, शिक्षासुधा-सुस्वाद।
सरस सुधा करि निरस जो, नाशत विषम विषाद। ३००॥

इत्यानन्दभाष्यकार श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य सम्प्रदायकौस्तुभश्रीटीलाद्वारपीठाचार्य श्री १००८अचार्यपादभगवच्छ्रीसाकेतनिवासाचार्य "श्रीटीलाचार्य" सम्पादिता शिक्षा-सुधा समाप्ता।

स्वरूप का अनुसन्धान। इन भेदों से श्रीरामोपासना पाँच प्रकार की है।

×अनुद्धर्ष = संतोष को उद्धर्ष कहते हैं। उद्धर्ष के अभाव को अनुद्धर्ष कहते हैं। २--अभ्यास = वार वार भगवत् स्वरूप का अनुसन्धान (चिन्तन)। ३-अनवसाद = चित्त के अदैन्य को अनवसाद कहते हैं। अवसाद = दैन्य। ४--कल्याण = सत्य, आर्जव दया दान इत्यादि। ५--क्रिया = अपनी शक्ति के अनुसार पञ्चमहायज्ञादि का अनुष्ठान करना। ६--विवेक = जातिदुष्ट तथा आश्रयदुष्ट उच्छिष्ट केशादियुक्त अन्न को छोड़कर शुद्ध अन्नसे शरीर की शुद्धि को विवेक कहते हैं। ७-विमोक = कामादिकोंकी आसक्ति के त्यागको विमोक कहते हैं। इन सातों से भक्ति होती है।

उपनिषद्भाष्यकार स्वामी श्रीवैष्णवदास शास्त्री।

उपनिषद्भाष्यकारस्वामिश्रीवैष्णवदासशास्त्रि विरचिताः प्रबन्धाः—

प्रबन्धाः	मूल्यम्
१ श्रीमद्रामानन्दाष्टकम् ।	≡)
२ प्रमेयपरिशोधिनी ।	
३ वेदान्तवेद्यश्रीरघुनाथप्रपत्यष्टकम् ।	।)
४ अधिकरणरत्नमाला (पूर्वार्ध) ।	
५ श्रीजानकीचरणरेणुवैभवाष्टकम् ।	यन्त्रस्थ
अधिकरणरत्नमाला (उत्तरार्ध) ।	
६ विशिष्टाद्वैतचन्द्रिका ।	शीघ्र छपेगी
७ प्रश्नोपनिषदो वैष्णवभाष्यम् ।	१)
८ प्रश्नोपनिषदो भाषाभाष्यम् ।	
९ माण्डूक्योपनिषदो वैष्णवभाष्यम् ।	≡)
१० मङ्गलाष्टकम् ।	
११ श्रीटीला-पञ्चस्तवी	
१२ मुण्डकोपनिषदो वैष्णवभाष्यम् ।	यन्त्रस्थ
१३ तैत्तरीयोपनिषदो ”	”
१४ ऐतरेयोपनिषदो ”	”
१५ विशिष्टाद्वैतपरिष्कारः ।	अमुद्रित
१६ अनुपपत्तिसप्तकम् ।	”
१७ आचार्यपरम्परा	”

प्राप्तिस्थानम्—

स्वामी श्रीवैष्णवदास शास्त्री 'श्रीवैष्णव'

खाकचौक (पहाड़ीबाबा का आश्रम)

वन्सीवट—श्रीवृन्दावन । यू० पी० ।

वैष्णवभाष्यकार स्वामी श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री 'श्रीवैष्णव' की आचार्यपरम्परा—

१- सर्वेश्वर भगवान श्रीरामजी ।
२- जगज्जननी श्रीजानकीजी ।
३- नित्यपार्षद श्रीहनुमान जी ।
४- श्रीब्रह्माजी ।
५- श्रीवशिष्ठ जी ।
६- श्रीपराशर जी ।
७- ब्रह्मसूत्रकार श्रीवेदव्यासजी ।
८- शुकदेवजी ।
९- बोधायनवृत्तिकारश्रीपुरुषोत्तमा-चार्यजी (बोधायन, उपवर्ष)
१०- जगद्गुरु श्रीगङ्गाधराचार्य जी
११- ” ” सदाचार्य ”
१२- ” ” रामेश्वराचार्य ”
१३- ” ” द्वारानन्दाचार्य ”
१४- ” ” देवानन्दाचार्य ” प्रमिताक्षराकार ;
१५- ” ” श्यामानन्दाचार्य ”
१६- ” ” श्रुतानन्दाचार्य ”
१७- ” ” चिदानन्दाचार्य ”
१८- ” ” पूर्णानन्दाचार्य ”
१९- ” ” श्रियानन्दाचार्य ”
२०- ” ” हर्यानन्दाचार्य ”
२१- ” ” राघवानन्दाचार्य ”
२२- ” ” रामानन्दाचार्य ” यतिराज आनन्दभाष्यकार ।
२३- ” ” अनन्तानन्दाचार्य ”
२४- ” ” कृष्णदासजी महाराज पयोहारीजी ।
२५- ” ”साकेतनिवासाचार्य (टीलाजी)
२६- ” ” भागीरथदास ”
२७- ” ” गङ्गाधरदास ”
२८- ” ” रामदास ”
२९- ” ” अंगदपरमानंददास”
३०- ” ” रामछबीलदास ”
३१- ” ” गोवर्धनदास ”
३२- ” ” जानकीदास ”
३३- ” ” सहजरामदास ”
३४- ” ” स्वामीमङ्गलदासाचार्यजी (डाकोर)
३५- ” ” भरतदास ”
३६- ” ” मथुरादास ”
३७- ” ” दामोदरदास ”
३८- ” ” सरयूदास “
३९- स्वामी श्री नृसिंहदास जी महाराज पहाड़ीबाबा (खाकचौक श्रीवृन्दावन)
४०- ” श्रीगोपालदास जी महाराज (मौनीजी)
४१- उपनिषद्भाष्यकार स्वामी श्री वैष्णवदासजीशास्त्री 'श्रीवैष्णव' न्यायवेदान्तकेसरी न्यायरत्न वेदान्ततीर्थ तर्कवागीश ।

———